

भज लो हरि को नाम- भज लो प्रभु को नाम  
ये तन की का गत हू- है ॥२॥

नरतन पाय काय इतराओ  
कर लो प्रभु की सेवा  
ये तन को कोई मूल नहीं है  
बन हो काल कलेवा  
पर है कोई ने काम- पर है कोई ने काम  
ये तन की का गत हू- है

भज लो हरि-----

ध्रुव- प्रह्लाद- भागीरथ तर गये  
तर गये धन्ना जाट  
राम के हाथों जीद तरे- तो  
शबरी की का बात  
पहुँची प्रभु के धाम- पहुँची प्रभु के धाम  
ये तन की का गत हू- है

भज लो हरि-----

देखे हरिश्चन्द्र से दानी  
 सपने में दे डारे  
 सत्य के पीछे राज खों दौड़ो  
 फिरे विपत्त के मारे  
 दौड़ो जग में है नाम-दौड़ो जग में है नाम  
 ये तन की का गत हू-है  
 भज लो हरि-----

गढ़-गढ़ तूने महल बनाये  
 नाना-भाँत सजाये  
 सबरो दूर इतई रह जे हे  
 कहु संग न जाये  
 जल है तेरो जो चाम-जल है तेरो जो चाम  
 ये तन की का गत हू-है  
 भज लो हरि-----

हे प्रभु दास "श्री बाबा श्री" तुम्हारे  
 चरण दौड़ कहाँ जाऊँ  
 जनम-जनम के तुम हो स्वामी  
 तुमको शीश न बाऊँ

भज हों सुबह और शाम-भज हों सुबह और शाम  
 ये तन की का गत हू-है  
 भज लो हरि....